International Journal of HumanitiesAnd Social Science Research
ISSN: 2455-2070; Impact Factor: RJIF 5.22
www.socialsciencejournal.in
Volume 3; Issue 5; May 2017; Page No. 105-106

मानवेन्द्र नाथ राय एक क्रांतिकारी मानववादी विचारक

डॉ. ज्योति कुशवाह

सहायक प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान, के. आर. जी. स्वशासी महाविद्यालय, ग्वालियर, मध्य प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

भारतीय राजनीतिक चिंतन में पूर्व में नहीं वरन् वर्तमान में भी मानव जाति के चारों महान धर्मों – हिंदू, बौद्ध, इस्लाम एवं ईसाई धर्म का सम्मिश्रण विद्यमान है। विगत दो शताब्दियों में जिन चिंतकों ने भारतीय मानस पर अपनी अमिट छाप छोड़ी है, उनमे से कुछ ऐसे चिंतक हैं जिनकी महानता कई रूपों में प्रकट होती है। भारतीय चिंतकों का प्राकृतिक घटनाओं से प्रभावित होना, इन्हे यूरोपीय चिंतकों से काफी हद तक अलग रखता है। ऐसे ही एक भारतीय चिंतक मानवेन्द्र नाथ राय के मानववाद से संबंधित विचारों की अधिकता दिखाई देती है।

मानवीय स्वतंत्रता के प्रति राय की उत्कट ललक कभी मंद नहीं पड़ी। उनका मानववादी दर्शन इसी ललक का परिणाम है उनका कहना था कि '' एक उग्रवादी मानववादी स्वयं अपने से ही प्रारंभकरता है।'' राय ने बम्बई से ' इण्डिपैण्डेंट इण्डिया के नाम से एक साप्ताहिक निकालना शुरू किया। वर्तमान में यह – 'रैडिकल –ह्यूमौनिस्ट' के नाम से प्रकाशित हो रहा है।

अपनी पुस्तक – संक्रांति के दौर का भारत में राय लिखते हैं – ''अंग्रेजों के शोषण के बावजूद देशी सामंत इस हकीकत के प्रति जागरूक नहीं है कि उनका अस्तित्व विनाश के कगार पर खड़ा है। ब्रिटिश सरकार की कृपा दृष्टि के कारण ही ये समाज में एक दकियानूसी तत्व की तरह बरकरार रखे गये हैं। ब्रिटिश सत्ता कभी भी विलुप्त होते सामंतवाद के इन वंशजों पर आधारित नहीं रही है। भारत की सरकार ब्रिटिश पूँजीपति वर्ग की प्रतिनिधि थी। इसके बावजूद भारत की सरकार ने इन्हें सामाजिक व्यवस्था पर आरोपित करके बनाये रखा है। वे यह अच्छी तरह से जानते थे कि उनका अस्तित्व ब्रिटिश सत्ता के कारण ही था। इसीलिए वे पूरी तरह से ब्रिटिशों के समर्थक थे। किसी भी संकट के समय वे उनकी सहायता करने को तत्पर रहे। एक युद्ध में उन्होंने ऐसा करके दिखाया भी। इतनी स्पष्टवादिता राय को निश्चित ही एक क्रांतिकारी की श्रेणी में रखती है। उनका लेखन कभी भी पूर्वाग्रह से ग्रसित नहीं रहा। जिस ब्रिटिश, साम्राज्य की वे आलोचना करने से नहीं चूकते थे, तो दूसरी तरफ जरूरत पड़ने पर वे उसके साथ खड़े हुये दिखलाई पड़ते थे। द्वितीय महायुद्ध की परिस्थितियों के दौरान ही भारत की धरती पर फासीवाद के प्रवेश की आशंका से चिंतित राय ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को भी सतर्क किया था। राय का मानना था कि फासीवादी विरोधी आंदोलन व्यापक एवं विस्तार रूप में हो तथा यह कोशिश होनी चाहिए कि सभी देश एक होकर इस बात को समझें कि फासीवाद हमेशा से ही राजनीतिकस्वतंत्रता, सामाजिक न्याय, सांस्कृतिक उत्थान एवं बौद्धिक और आध्यात्मिक प्रगति के विरोधी रहे हैं। इसलिए उनका मानना था कि फासीवाद को पूरी तरह से ही खत्म करना होगा।

राय ने सिर्फ फासीवाद आंदोलनों का ही विरोध नहीं किया बल्कि फासीवाद विचारधारा से लड़ने के लिए भी प्रेरित किया। उनके अनुसार ''फासीवाद सिर्फ यूरोपियन परिघटना नहीं है। जहाँ तक भारत वर्ष का सवाल है यह विचारधारा भारतीय परम्परा में भी पाई जाती है। फासीवाद के विरूद्व लड़ाई सिर्फ युद्ध तक सीमित नहीं है, बल्कि यह भारतवर्ष के अंदर (सामाजिक स्तर पर) समायें हुये तत्वों के विरूद्व भी लड़ना है।''

राय के संपूर्ण चिंतन पर नजर डालें तो हमें प्रतीत होता है कि उनके चिंतन का मूल आधार मानव के महत्व को ही प्रतिष्ठापित करना रहा है, जिस तरह से ईसा से सदियों पूर्व प्रोटेगौरस ने कहा था कि '' मनुष्य ही समस्त की कसौटी है।'' प्रोटेगौरस भी जब मनुष्य की बात करता है, तो उसका आशय भी किसी समूह अथवा बहुमत से नहीं है, बल्कि उसकी दृष्टि में भी मनुष्य एक इकाई के रूप में रहा है। उस इकाई के रूप में जिससे आरंभ होकर ही दहाई और सैकड़ा के क्रम आगे बढ़ते है और सार्थकता पाते हैं। अतः आरंभ इकाई पर ही आधारित होता है और ऐसे में प्रोटेगोरस का अर्थ आरंभ में आने वाले शून्य से नहीं है, जिसमें से दार्शनिकों का एक वर्ग इस ब्रह्मांण्ड की रचना का आरंभ मानता है, प्रत्युत प्रोटेगोरस का अर्थविशुद्ध ऐसी इकाई से है, जो सारवान है, जो अपने में पूर्ण है और स्वतः एक मूल्य है। मनुष्य को वह एक इसी ही इकाई मानते हुये समग्र की कसौटी मानते थे। वह मनुष्य, जो केवल शरीर रचना से ही मनुष्य न हो, अपितु मानसिक श्रेष्ठता के कारण मनुष्य हो। वही श्रेष्ठता, जो उसे समस्त जीव–जगत में एक अद्भुत विशिष्टता प्रदान कराती है। इस मानसिक श्रेष्ठता की उपलब्धि निः संदेह एक स्वतंत्र व उन्मुक्त मानस से ही संभव है। प्रोटेगोरस के इस कथन में बसा मानव एक ऐसा ही स्वतंत्रत और उन्मुक्त चिंतन युक्त मानव है। एक ऐसा मानव, जो अपनी संपूर्ण योग्यता व गुणों को अपनी संपूर्ण सामर्थ्य के अनुसार, संपूर्ण रूप से प्रकाशन प्रदान कर सके और सर्वतोन्मुखी 'संपूर्ण' पर आधारित व्यक्तित्व को धारण करने वाली समग्रता का प्रतीक सिद्ध हो सके। लेकिन ऐसा वह तभी कर सकता है जब उसकी इस संपूर्ण सामर्थ्य को विभिन्न नामों से पुकारे आदि बाह्य प्रतिबंधों

के बंधनों से मुक्त रहने का अवसर प्राप्त हो सके। जिस पर प्रतिबंध हो, तो केवल स्वयं उसी के अंतः करण का ओर इस अंतः करण की की कसौटी भी निः संदेह वह 'स्वयं ही होगा। अन्यथा तो समग्रता का अर्थ ही खण्डित हो जायेगा। इसी यूनानी मानववादी धारणा से राजनीतिक चिंतन जगत में उदारवादी आंदोलन प्रेरित हुआ। राय के अनुसार जब हम यह कहते है कि मानव समग्र की कसौटी है तो ऐसा कहकर हमने कोई नई मांग पेश नहीं की है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. डॉ विश्वविद्यालय वर्मा एवं सत्य नारायण दुबे, आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन।
2. विश्वनाथ नरवणे आधुनिक भारतीय चिंतन
3. दक्तदंत ढेंगड़ी, एकात्मक मानववाद।
4. दीनदयाल उपाध्याय, एकात्मक मानवाद
5. डॉ.डी.आर.जाटव, सोशल एण्ड ह्यूमैनिस्ट थिंकर्स (इंडियन एण्ड वेस्टर्न)
6. एम.एन.राय, पालिटिक्स, पावर एण्ड पार्टीज